उषा यादव की कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा से

हिन्दी विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु शोध-प्रबंध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थी

कीर्ति कुमारी

शोध निर्देशिका

डॉ. सुमन शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा-282005

2023

शोध-परिचय:

साहित्य और समाज दोनों ही एक दूसरे के संपूरक हैं और एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं हो सकता, दोनों के बीच एक स्पष्ट संबंध है। चूँकि साहित्य समाज के गुणों को प्रतिबिम्बित करता है, इसलिए इसे समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य उस समाज को दर्शाता है जिसमें वह लिखा जाता है। यह हमारे आसपास की दुनिया में होने वाली घटनाओं और दृष्टिकोणों को प्रकट करता है। आज हिन्दी साहित्य दिन प्रतिदिन फल-फूल रहा है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण योगदान कहानियों का है। कहानियों को हम अपने जीवन का एक भाग मान सकते है क्योंकि इसमें यथार्थवाद अधिक है। संभवत पाठकों को कहानी विधा अधिक पंसद आती है। कहानियों के लिए प्रसिद्ध कहानी एवं उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द ने कहा है- **"कहानी वह ध्रुपद की तान है जिसमें गायक महफिल शुरू होते ही अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा दिखा देता है। एक क्षण में चित्त को इतने माधुर्य से परिपूर्ण कर देता है जितना रातभर गीत सुनने पर भी नहीं हो सकता है।"**

शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे कहानी सुनना और पढ़ना पंसद न हो और जिसने कभी कहानी न सुनी हो। हर किसी ने अपने बचपन में अपनी दादी-नानी से कहानी जरूर सुनी होगी और यह सिलसिला पीढ़ी दर पीढ़ी चलता ही जा रहा है। कहानी के प्रति आकर्षण आज के आधुनिक युग में भी कम नही हुआ है।

चेतना का अर्थ एवं स्वरूप

चेतना शब्द का अंग्रेजी में अनुवाद **"Consciousness"** होता है जिसकी व्युत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई है जिसका अर्थ है- **"Knowing things together". "Consciousness"** शब्द सामान्यतः मानसिक सतर्कता **(Mental awareness)** के लिए प्रयुक्त होता है - **The state of being aware of and responsive to one surroundings.** अर्थात् चेतना शब्द बुद्धि, ज्ञान, मनोवृत्ति, स्मृति, सुधि, संज्ञा, होश आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।

हिन्दी विश्वकोश के अनुसार- "चेतना मनुष्य की वह विशेषता है जो उसे व्यक्तिगत विषय में तथा अपने वातावरण के विषय में ज्ञान कराती है। इसी ज्ञान को विचार शक्ति या बुद्धि कहा जाता है।"

सामाजिक चेतना से हमारा तात्पर्य समाज के प्रति चिन्तन, जागरूकता, संवेदनशीलता, ज्ञान आदि है। अतः

लोकहितकारी विचारों का उपजना ही सामाजिक चेतना कहलाती है।

सांस्कृतिक चेतना अर्थात् चेतना का संबन्ध संस्कृति से होना है कोई भी राष्ट्र अपनी संस्कृति के विशिष्ट होने के कारण ही अपनी एक अलग पहचान बना पाता है सांस्कृतिक चेतना व्यक्तिगत स्तर पर अनुभूत होकर भी "स्व" से ऊपर उठकर सामाजिक हित की बात करती है,इसी कारण एक साहित्यकार सृजन के दौरान स्व का इस तरह विस्तार करता है कि सम्पूर्ण विश्व के सांस्कृतिक तन्तु उसमें समाविष्ट हो जाते हैं। यही सांस्कृतिक चेतना कहलाती है।

उषा यादव का जीवन परिचय-

उषा जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। उनका जन्म 25 जुलाई 1948 को उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर में हुआ। उषा जी का जन्म आर्थिक रूप से संपन्न परिवार में हुआ। उनकी माता जी का नाम श्रीमती प्रेमवती यादव और पिता जी का नाम चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक' है। उषा जी अपने माता-पिता की पहली संतान होने के कारण लाड़-प्यार में पली। उषा जी की प्रारम्भिक शिक्षा कानपुर की एक पाठशाला में हुई। उन्होनें अपनी स्कूली शिक्षा से लेकर बी.ए. तक की पढ़ाई उन्होंने मालरोड,कानपुर स्थित एस. एन. बालिका विद्यालय से की। एम. ए. (हिंदी तथा इतिहास) प्राइवेट परीक्षार्थी की हैसियत से पास की। कानपुर विश्वविद्यालय से "पं. श्रीराम शर्मा, व्यक्तित्व एवं कृतित्व" विषय में पी.एच.डी. 1973 में की तथा सन् 1996 में "हिंदी की महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में मानवीय संवेदना"विषय पर डी.लिट्. की। उनकी लेखनी ने उपन्यास, कहानी, नाटक, बालसाहित्य आदि विधाओं को अपने लेखन का विषय बनाया है। उषा जी की महिला कहानीकारों में अपनी विशिष्ट पहचान है। उन्होंने अभी तक नौ कहानी संग्रह लिखे हैं। अब तक प्रकाशित कहानी संग्रह निम्न हैं –

कहानी संग्रह-

टुकड़े-टुकड़े सुख (1987), सपनों का इन्द्रधनुष (1989), जाने कितने कैक्टस (1998), सुनो जयन्ती (2009), चाँदी की हँसली (2010), चुनी हुई कहानियाँ (2010), तेरहवां पृष्ठ (2017), वह एक पल (2019), उषा यादव की श्रेष्ठ कहानियाँ (2022)।

पुरस्कार एवं सम्मान - उषा जी को अब तक अनेक पुरस्कारों से विभूषित किया गया है। वह निम्न प्रकार हैं-

1. प्रथम पुरस्कार- प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति पुस्तक पर वर्ष 1969 में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा **'अनुशंसा पुरस्कार'** से सम्मानित किया है।
2. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा हिंदी बाल साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार **'बाल साहित्य भारती'** से वर्ष 1998 में सम्मानित में किया गया है।
3. अखिल भारतीय महिला परिषद् आगरा द्वारा साहित्यिक सेवाओं के लिए **'नारीभूषण'** उपाधि से विभूषित किया गया है।
4. **'राष्ट्रीय हिंदी सेवी सहस्त्राब्दी'** सम्मान सितम्बर 2000 मे प्राप्त हुआ है।
5. **'द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी स्मृति'** सम्मान दिसम्बर 2003 में प्राप्त हुआ है।
6. 2003 में 'किले का रहस्य' (पांडूलिपि) को **'भारतेन्दु हरिश्चंद्र'** पुरस्कार प्राप्त हुआ है।
7. भीलवाड़ा (राजस्थान), द्वारा हाट (उत्तराखण्ड) व खरीमा (उत्तराखण्ड) से क्रमशः **'साहित्य गौरव'**, **'साहित्यश्री'** एवं **'साहित्य मार्तण्ड'** सम्मान प्राप्त हुआ है।
8. नागरी प्रचारणी सभाआगरा द्वारा **'हिंदी गौरव'** सम्मान 2010 में मिला है।
9. **'अखिल भारतीय वीरसिंह देव पुरस्कार',** सम्मान 2011 में मिला है।
10. मीरा फाउन्डेशन इलाहाबाद द्वारा **'मीरा स्मृति'** सम्मान 2011 में मिला है।
11. भारत सरकार द्वारा **'पदम् श्री'** सम्मान वर्ष 2021 में मिला है।

शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन-

विभाग द्वारा पी.एच.डी. शोधार्थियों को शोध प्रबंध के विषय चयन हेतु सूचित किया गया तो शोधार्थी ने अपनी शोध निर्देशिका एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सुमन शर्मा जी से इस बारे में बात की। शोधार्थी ने उनको बताया कि मेरी रुचि कहानियों में है। इसके उपरांत डॉ. सुमन शर्मा जी के द्वारा शोधार्थी को यह सुझाव दिया गया कि उषा यादव जी

समकालीन साहित्यकार हैं जिन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार, 2021 से भी नवाजा गया है। यह पुरस्कार उन्हें उनके उल्लेखनीय साहित्यिक रचनाओं जैसे कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक आदि पर मिला है। तब उन्होंने शोधार्थी को उषा यादव की कहानियों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात् शोधार्थी ने उषा यादव जी द्वारा रचित कहानी संग्रहों का संकलन किया। कहानी संग्रह के संकलन के बाद शोधार्थी ने अपनी शोध प्रबंध के विषय चयन पर कार्य करना शुरू किया। शोधार्थी अंततः इस निष्कर्ष पर पहुंची कि लेखिका की समाज में गहरी रुचि है और कहानियों के अपने संग्रह में उन्होंने आधुनिक समय में मानवीय संबंधों, सामाजिक मूल्यों और उनकी प्रासंगिकता और समाज में बड़ों की भूमिका के खोखलेपन का पता लगाया। दूसरों के प्रति सम्मान में कमी, रिश्तों में बदलाव, स्वार्थी दृष्टिकोण, और पुरुषों और महिलाओं का एक दूसरे के प्रति बदलते नजरिए, भ्रष्टाचार, मोहभंग, व्यक्तिगत पहचान का संकट, आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन और सामाजिक संरचना में बदलाव आदि को चित्रित किया गया है। अंततः शोधार्थी ने शोध-निर्देशिका डॉ. सुमन शर्मा से शोध विषय से सम्बन्धित वार्ता की। आपसी वार्तालाप के पश्चात् शोधार्थी के शोध का विषय **उषा यादव की कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना** विषय का चयन किया है।

प्रस्तुत शोध कार्य से पूर्व हुए शोध कार्यों का विवरण-

1. उषा यादवः साहित्य साधना के विविध आयाम, शोधकर्ता- मिथलेश मुदगल, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, वर्ष-2002
2. उषा यादव के कथासाहित्य में जीवन-मूल्य, शोधकर्ता- सविता सारस्वत, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, वर्ष-2002
3. उषा यादव और उनकी साहित्य-साधना, शोधकर्ता- राजेश कुमार, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, वर्ष-2004
4. कथाकार उषा यादव एक मूल्यांकन, शोधकर्ता- तुकाराम कल्याणकर, मराठावाडा विश्वविद्यालय, नांदेड, वर्ष-2009
5. उषा यादव के बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान, शोधकर्ता- अनुराधा, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, वर्ष-2013

6. उषा यादव के उपन्यासों में स्त्री विमर्श, शोधकर्ता- मोनिका, गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. हरिद्वार, उत्तराखण्ड, वर्ष-2016
7. उषा यादव के कथा साहित्य का अनुशीलन, शोधकर्ता- शीतल गुंडेराव झिगाड़े, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर, महाराष्ट्र, वर्ष-2017
8. उषा यादव का कथा साहित्य और नारी विमर्श, शोधकर्ता- दत्तात्रय महादेव सालवे, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर, महाराष्ट्र, वर्ष-2018

अतः उषा यादव के साहित्य पर उपर्युक्त शोध संपन्न हो चुके हैं। चूँकि मेरा शोध विषय **उषा यादव की कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना** विषय पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। इस दृष्टि से मेरा यह शोध कार्य पूर्णतः मौलिक एवं नवीन होगा।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य एंव महत्व-

किसी भी कार्य को करने के पीछे शोधकर्ता का कोई न कोई उद्देश्य निहित होता है और शोधार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनुसंधान कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। उषा यादव की कहानियों में वर्णित सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना को शोध विषय का मुख्य बिन्दु बनाया गया है। प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत उषा यादव की कहानियों के द्वारा समकालीन परिवेश में सामाजिक विचारधारा, मर्म, चिन्तन, जागरूकता संवेदनशीलता आदि गुणों को राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत रखकर उन्हें उजागर किया जायेगा। वहीं हम सांस्कृतिक चेतना के अन्तर्गत वर्तमान समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास, लोकहित, परिवेश आदि पहलुओं को उजागर कर इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष को ध्यान में रखते हुए समकालीन हिन्दी कहानियों में उषा यादव के योगदान को भी उजागर किया जायेगा। एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए उषा यादव के योगदान को परिलक्षित करते हुए नयी सोच अथवा विचारधारा को प्रस्तुत करना ही शोध का मुख्य उद्देश्य होगा। प्रस्तुत शोध कार्य समाज को एक नई दिशा प्रदान करेगा एवं इसके माध्यम से भविष्य में भावी शोधार्थी मेरे इस शोध कार्य से लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना-

1. साहित्यकार उषा यादव की कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना की खोज करना।
2. आधुनिकता के चकाचौंध भरे जीवन में नैतिक मूल्यों के ह्रास को उजागर करना।
3. उषा यादव का समाज के प्रति तथा समाज के प्रत्येकवर्ग के प्रति दृष्टिकोण का चित्रण।
4. उषा यादव के व्यक्तित्व का हिन्दी कहानी परंपरा पर प्रभाव देखना।
5. उषा यादव की कहानियों के माध्यम से जीवन मूल्यों को बचाने का भरसक प्रयास।

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रयुक्त प्रविधि-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य होने के कारण वह खोज करता रहता है। साहित्य के क्षेत्र में शोध करते समय विभिन्न अनुसंधान प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए किसी प्रविधि का अवलंब करना आवश्यक होता है तभी वह कार्य वैज्ञानिक माना जा सकता है और वही कार्य आलोचकों के सामने ठहर सकता है, जो वैज्ञानिक हो। वैज्ञानिकता के अभाव में हम उस कार्य पर पूरा विश्वास नहीं कर पाते, इसलिए उषा यादव की कहानी-संग्रहों में सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन करने के लिए इस शोधकार्य में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, समीक्षात्मक, साक्षात्कार, प्रश्नावली, और अनुसंधान प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा।

शोध कार्य की मौलिकता-

उषा यादव की कहानियों में सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना पर मेरे द्वारा किया जाने वाला शोध कार्य वर्तमान एवं भविष्य दोनों में उपयोगी, मौलिक एवं नवीन सिद्ध हो, ऐसा मेरा प्रयास रहेगा, साथ ही साहित्य के क्षेत्र में उनके अवदानों का उचित मूल्यांकन हो, शोध और समीक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध संतुलित दृष्टि का प्रतिपादक सिद्ध हो। शोध द्वारा साहित्य और समाज को एक नवीन विचारधारा देने का एक क्षुद्र प्रयास रहेगा। शोध और समीक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध प्रबंध एवं विनम्र किन्तु संतुलन दृष्टि का प्रयास भर रहेगा। इस शोध के द्वारा एक नई दृष्टि साहित्य को देने के लिए मेरा एक नगण्य प्रयास किंचित मात्र भर होगा।

साहित्य सर्वेक्षण-

शोध विषय से संबंधित सामग्री विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों के माध्यम से प्राप्त की गई है जिनका विवरण

इस प्रकार से है-

1. दयालबाग़ शिक्षण संस्थान, आगरा

2. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

3. डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

प्रथम अध्यायः हिन्दी कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का स्वरूप

(क) हिन्दी कहानी में सामाजिक चेतना के आयाम

(ख) हिन्दी कहानी में सांस्कृतिक चेतना के आयाम

(ग) समाज एवं संस्कृति की अन्योन्याश्रितता

द्वितीय अध्याय: उषा यादव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(क) उषा यादव के कृतित्व का परिचय

(ख) उषा यादव का काल एवं समय

(ग) समकालीन हिन्दी कहानी और उषा यादव

तृतीय अध्याय: उषा यादव की कहानियों में निहित सामाजिक चेतना

(क) सामाजिक चेतना

(ख) राजनीतिक चेतना

(ग) धार्मिक चेतना

(घ) ऐतिहासिक चेतना

(ङ) नैतिक चेतना

(च) अन्य

चतुर्थ अध्याय: उषा यादव की कहानियों में निहित सांस्कृतिक चेतना

(क) उषा यादव की कहानियों में निहित स्त्री प्रश्न

(ख) सांस्कृतिक मूल्यों का पतन

(ग) समाज में व्याप्त कुरीतियाँ

(घ) सांस्कृतिक चेतनाः पूर्व ओर पश्चिम के सन्दर्भ में

(ङ) मानवता बनाम अमानवीयता

पंचम अध्याय: उषा यादव की कहानियों का शिल्पगत वैशिष्ट्य

(क) भाषिक विधान

(ख) शिल्प विधान

(ग) रूप और अन्तर्वस्तु

(घ) भाषा और संस्कृति

(ङ) भाषा और समाज

(च) कथा भाषा का वैशिष्ट्य

षष्ठ अध्यायः समकालीन कहानीकार और उषा यादव का स्थान

(क) नासिरा शर्मा

(ख) मृदुला गर्ग

(ग) उषा प्रियवंदा

(घ) चित्रा मुद्गल

उपसंहार

परिशिष्ट-

1. आधार ग्रन्थ सूची

2. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3. शब्दकोश

4. विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं

5. वेबसाइट्स

नोटः- शोध निर्देशिका की सलाह एवं निर्देश से शोध रूपरेखा में 20 प्रतिशत का परिवर्तन संभव है।

सन्दर्भ सूची

आधार ग्रन्थ

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक	वर्ष
1.	टुकड़े-टुकड़े सुख	उषा यादव	अमर प्रकाशक, सदर, मथुरा	1987
2.	सपनों का इन्द्रधनुष	उषा यादव	ग्रन्थ अकादमी (प्रभात), दिल्ली	1989
3.	जाने कितने कैक्टस	उषा यादव	आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली	1998
4.	सुनो जयन्ती	उषा यादव	राही प्रकाशक, दिल्ली	2009
5.	चाँदी की हँसली	उषा यादव	आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली	2010
6.	उषा यादव: संकलित कहानियाँ	उषा यादव	नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली	2010
7.	तेरहवां पृष्ठ	उषा यादव	डायमंड पाकेट बुक्सप्रा.लि.	2017
8.	वह एक पल	उषा यादव	के.के.पब्लिकेशन्स, दिल्ली	2019
9.	उषा यादव की श्रेष्ठ कहानियाँ	उषा यादव	नमन प्रकाशक, दिल्ली	2022

सहायक ग्रन्थ

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक	वर्ष
1.	भारतीय समाज का स्वरुप	डॉ. सीताराम झा “श्याम”	बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना	2015
2.	समकालीन हिंदी कहानी का सामाजिक सरोकार	डॉ. नरेन्द्रनाथ सिंह	आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, गाजियाबाद	2010
3.	समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य	पुष्पपाल सिंह	सामयिक बुक्स प्रकाशक, नई दिल्ली	2011
4.	संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह दिनकर	उदयाचल, पटना	1956
5.	आधुनिक हिन्दी साहित्य में सामाजिक चेतना	डॉ. शेख अब्दुल वहाब	संरचना प्रकाशक, इलाहाबाद	2015
6.	हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना	डॉ. राजेश रानी	के.के. पब्लिकेशन, दिल्ली	2007
7.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	मलिक एंड कम्पनी, जयपुर	2007
8.	भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व	डॉ. रूपनारायण त्रिपाठी	पंचशील प्रकाशन जयपुर	2013
9.	प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व	डॉ. बाबूराम त्रिपाठी	महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा	1997
10.	विनयकालीन सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना	राधेश्याम प्रसाद	राजेश पब्लिकेशन,दिल्ली	2019
11.	भारतः सांस्कृतिक चेतना का अधिष्ठान	बलदेव भाई शर्मा	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	2018
12.	हिन्दी साहित्य का इतिहास,	डॉ. नगेन्द्र, डॉ.	मयूर बुक्स, नई दिल्ली	2018

		हरदयाल		
13.	सन्तों एवं सूफी कवियों की सांस्कृतिक चेतना	अरुण कुमार पाण्डेय	अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली	2007
14.	सामाजिक चेतना और हिन्दी साहित्य	रत्नाकर पाण्डेय	बायो-ग्रीन, नई दिल्ली	2007
15.	समाजवाद	डॉ. सम्पूर्णानन्द	काशी विद्यापीठ, बनारस	2004

कोश ग्रन्थ-

- हिन्दी साहित्य कोश भाग-1, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण 1985
- हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश, डॉ. देवदत्त राय, लक्ष्मी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010
- हिन्दी विश्वकोश भाग-4, डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्रा, अरिहन्त पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, प्रथम संस्करण 2012
- मानक हिन्दी पर्याय कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, विद्या प्रकाशन मन्दिर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989